**Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)**

VOL- VIII | ISSUE- II | FEBRUARY | 2021 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.149 | ISSN 2349-638x

# e=;h iq"ik dk miU;kl dk f'kYi lkS"Bo&,d v/;;u

ek.Moh ikBd

शोधार्थी

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

fgन्दी साहित्य को सशक्त बनाने वाली लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रगण्य है। उनके व्यक्तित्व के समान उनकी रचनाएँ भी आकर्षक हैं। गहन अनुभूतियों के अविरल प्रवाह के कारण उनके उपन्यास सशक्त हैं तो शिल्प विन्यास की खूबी से उनके उपन्यास श्रेष्ठ हैं। उनकी हर रचना विचारोत्तेजक एवं चिंतनयोग्य है। वे केवल नारी–विमर्श पर सिमटकर नहीं लिखती। वरन् अन्य लेखकों की नजर जहाँ नहीं पड़ती वहाँ दृष्टि गड़ाकर लिखती है। कोई भी विषय उनके कलम के परे नहीं रहते। उपन्यास कला एवं कहानीकला में मशहूर लेखिका जीवन की विभिनन पहलुओं को निजी अनुभव के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयत्न करती है। लेखनी की विशिष्टता के कारण मैत्रेयी पुष्पा ने अपने समय की अन्य लेखिकाओं के समकक्ष अपना स्थान जमा लिया है।

''डॉ. सुनीता कावले के अनुसार–समकालीन महिला लेखन तथा कथित संकीर्ण नैतिकता तथा अनैतिकता के काले सफेद घेरों से बाहर निकलकर नितान्त मानवीय आधार पर अपनी अस्मिता को तलाशने तथा पहचानने से जुड़ा लेखन है और इस लेखन की एक मुख्य सूत्रधार के रूप में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान अनन्य साधारण है।''[1]

लेखिका की उपन्यासों के कथ्यगत विविध आयामों के विवेचन के बाद उनके उपन्यास के शिल्प विधान पर भी गहन विश्लेषण की आवश्यकता है। उनके उपन्यासों की वस्तु और शिल्प को पृथक–पृथक मानना कथा सुविधा भोगी समीक्षा विचार है इसलिए कि वस्तु और शिल्प रचना की संश्लिष्ट इकाई है। अपने विषय की अनुभूति व्यक्त करना एक कथाकार की स्वाभाविक प्रक्रिया है। वह हमारे समाज के चेतन अचेतन सृटि को देखता है, महसूस करता है और अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता है। कथाकार द्वारा अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होते समय भाषा का स्थान विशिष्ट होता है। कथा साहित्य के शिल्प की मर्यादा के कारण जिन विचारों को नहीं रखा जा सकता है, उसे मैत्रेयी पुष्पा ने वैचारिक साहित्य के अन्तर्गत रखा है। मैत्रेयी पुष्पा के वैचारिक साहित्य का विषय प्रमुखतः नारी विमर्श है। समाज के विविध घटक नारी पर क्या प्रभाव डालते हैं, और उसमें कौन सा परिवर्तन होना चाहिए इसे वैचारिक साहित्य के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है। इस साहित्य में महिलाओं की जबरजस्त वकालत की है, साथ ही पुरूषों का नारी मुक्ति आँदोलको की तरह विरोध भी नहीं किया है। पुरूष की पुरूषी मानसिकता में परिवर्तन करने का प्रयास हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा के वैचारिक लेखन का और एक वैशिष्टय दिखाई देगा कि उन्होंने मात्र नारी की तारीफ ही नहीं की बल्कि उसके दोषों को भी प्रखरता से दर्शाया है। जहाँ पुरूष दोषी है वहाँ उस मानसिकता पर प्रहार किया हैं तो दूसरी ओर स्त्री को भी नहीं छोड़ा। स्पष्ट विचार भी इसका वैशिष्टय मानना होगा। साहित्य का प्रमुख उद्‌देश्य समजा के प्रति हमारे भाव, विचार तथा अर्थों की शाब्दिक अभिव्यक्ति करना है। साहित्य हमारे जीवन की अनुभूतियों के प्रकाशन का मार्ग है। हिन्दी साहितय में साहित्यकारों ने स्त्री के विषय में अपने किरदारों के माध्यम से काफी कुद कहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री की अवस्था में अनेक बदलाव आते रहे हैं। वर्गों, धर्मों, जातियों में बँटे समाज में नारी कभी देह, कभी वस्तु कभी दासी के रूप में ही चिन्हित की गई। अनेक महिला कथाकारों ने भी अपने कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से नारी संबंधित विविध प्रश्नों एवं समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्हीं महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखन के अलग शैली से अपना अलग अस्तित्व बनाया है तथा अपने कथा साहित्य से विशेष ख्याति अर्जित की है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास हो या कहानी हर बार नए विषय को लेकर कुछ अलग लिखना उनकी पहचान बन गयी है। उनका लेखन किसी एक दायरे में सिमटकर न रहकर हर नए अनछुए विषय को पाठकों के सामने रख देता है। उन्होंने अपनी सृजन यात्रा कानी से आरम्भ की लेकिन तत्पश्चात उन्हें यह अनुभव हुआ कि वे अपने भाव, विचारों को उपन्यास के माध्यम से अधिक सक्षमता से व्यक्त कर सकती है। इसी लिए उनके उपन्यास पढ़ने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके उपन्यास मिथक नहीं सार्थक लगते हैं। सहज, सरल, मुहावरेदार भाषा, मिश्रित शैली और सपाट बयानी यह भाषागत विशेषताएँ हैं। नैतिकता के बंधनों को त्यागकर अपने जीवन की सच्चाई आत्मकथा में व्यक्त की है। अपनी आत्मकथा को लेकर साहित्य जगत में काफी चर्चा में आई है।

बुन्देलखण्ड और ब्रज के सम्पूर्ण आंचल को साहित्य में स्थान दिया है। मैत्रेयी पुष्पा साहित्य में नारी मुक्ति से ज्यादा स्त्री की जागृति का स्वर दृष्टिगोचर होता है। कथा साहित्य के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित, तिरस्कृत, पीड़ित तथा दुःख उठाने वाले के जीवन की सच्चाई को सामने लाया है। कबूतरा जैसी पिछड़ी जनजाति को न्याय देने के लिए उनकी समस्याओं को उपन्यास के माध्यम से रखने का सफल प्रयास किया है। 'विजन' उपन्यास को छोड़कर सभी उपन्यास गाँव की पृष्ठभूमि में लिखे हैं। प्रेमचन्द्र और रेणु के बाद मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन को अपने साहित्य का केन्द्र बनाया है। ग्रामीण जीवन में आज भी अशिक्षा, अज्ञान, स्त्री–पुरूष भेदभाव, रूढ़ि, परम्परा, अंधविश्वास, शकुन–अपशकुन दिखाई देता है। सरकार के द्वारा चलायी गई ग्रामीण विकास की योजनाएँ, महिला आरक्षण, पंचायतराज कितना खोखला है, साहित्य से स्पष्ट होता है। नेता और अधिकारी मिलकर ग्रामीण जनता का शोषण करते हैं। राजनीति भ्रष्टाचार समाज में कितना उग्र रूप धारण कर चुका है स्पष्ट होता है। ग्रामीण जीवन और नारी–विमर्श साहित्य के केन्द्र में है। कथा साहित्य के नारी पात्र अत्यंत सशक्त रूप लेकर उभरे हैं। नारी पात्र की तुलना में पुरूष पात्र कमजोर है। उनके उपन्यासों का भाषा शैली की दृष्टि से विश्लेषण करने के उपरांत कहा जा सकता है कि कहानियों की तुलना में लेखिका ने उपन्यासों में भाषा शैली के प्रति अत्याधिक जागरूकता दिखाई है।

Hkk"kk&'kSyh&

लेखिका के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन करने पर कथा शिल्प के विभिनन रूप हमारे सामने आते हैं। उनके उपन्यासों में अवलोकित भाषा का शैलीगत वैविध्यपूर्ण प्रयोग लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता का परिचायक है। निश्चित ही उन्होंने अपने उपन्यासों के कथ्य की आन्तरिक माँग के अनुरूप ही भाषा और शैली को चुनकर तथा प्रयुक्त करके अपने शिल्प को परिपक्व बनाया है। 'शिल्पगत चमत्कार' या 'सायास शिल्प ग्रहण' का प्रयाय उन्होंने नहीं किया है। परन्तु अभिव्यक्ति की उनकी अपनी विशेष शैली व्यक्त हुई है। कथा साहित्य की आत्मा कथानक होता है तो उसका शरीर भाषा शैली और शिल्प होता है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ सौन्दर्यावृद्धि करते हैं। लोककथाएँ और लोकगीत संस्कृति की पहचान दिलाते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने कथा साहित्य निर्मिती में इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखा है। कथाकार अपने साहित्य की रोचकता बढ़ाने के लिए भाषा में ये नयी क्षमता निर्माण करता है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य के पढ़ने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है। उनकी भाषा पर बुन्देलखण्ड तथा ब्रज के आंचल का प्रभाव पड़ा है। मैत्रेयी पुष्पा विवाह के बाद दिल्ली जैसे महानगर में पति के साथ रहने आई इसीलिए उनकी भाषा पर महानगरीय रूप का प्रभाव भी दिखाई देता है।

वस्तुतः कथा साहित्य की आत्मा कथानक होता है तो उसका शरीर शिल्प होता है। कथा साहित्य की भाषा कथा साहित्य के सौन्दर्य को बढ़ाने का काम करती है। कितनी भी सशक्त कथा वस्तु क्यों ने हो उसे सफल रूप में रखने के लिए भाषा का महत्व अनिवार्य है। वर्ण्य विषय एवं शिल्पाविधान के सुन्दर समन्वय से एक रचना की निर्मिती होती है। शिल्प के अन्तर्गत भाषा शैली, शब्द प्रकार, लोक तत्व आदि को महत्व दिया जाता है। पात्रानुकूल भाषा पात्र के चरित्र–चित्रण में सहायक होती है। देश काल, संस्कृति, परिवेश तथा लिंग, आयु, आदि के कारण पात्र के विविध प्रकार होते हैं। रचनाकार इन पात्रों को सजीव रूप में चित्रित करने के लिए पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग करता है। भाषा परिवर्तनीय होने के कारण दो पीढ़ियों की भाषा में अन्तर आता है। इस अन्तर को ध्यान में रखरक रचनाकार पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कथा साहित्य में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। 'बेतवा बहती रही' का एक संवाद पात्रानुकूल भाषा को स्पष्ट करता है। इस उपन्यास में उर्वशी अपनी माँ के आँख की बीमारी के बारे में बात कर रही है। माँ को इलाज कराने के लिए अपने सासरे ले जाना चाहती है। माँ से कहती है–''अम्मा तुम्हारी आँखे हमे ठीक नहीं लग रही, देख नहीं पाती तुम।..... हमारे संग चलो अम्मा, मोतियाबिन्द तै नहीं है? तब माँ कहती है, 'का कैरही बेटा, अपने सासरे चलवे की कह रहीं? नरक के द्वारा खोल रही हामार लाने। तुम्हारे घर कौ अन्न–पानी खाके हम और कि तै जै हें।''[2]

इस संवाद में माँ और बेटी की भाषा मे अन्तर है। माँ की भाषा पर आँचलिकता का प्रभाव है तो बेटी के भाषा पर आधुनिकता का प्रभाव है। मैत्रेयी के रचना शिलता तथा उपन्यासों के कथ्य के बारे में हम कह सकते हैं कि उनके उपन्यासों में विविध आयामों पर चिन्तन हुआ है।

''गोपालपुरा पाँच कोस दूर सब एक ही दिशा में नहीं जाएँगे। दुर्जन तू किनारे से, दूलन तू रिपटा से, खुरदा जंगल की ओर से, रूप सिंह राणा को लेकर बगलवाली पगडंडी से। सबसे सब बम्बा की पुलिया पर मिलो, जहाँ कैथा के दो पेड़ सटे खड़े हैं। भरोसे चमार वहीं मिलेगा, चुपचाप सौ रूपया थमा देना। वह सूचक है। बाकी सौ काम पूरा होने के बाद..... ।''[3]

इस प्रसंग को पढ़ने समय एक चित्र सामने आता है। 'झूलानट' उपन्यास के शीला की शादी के बाद उसकी हाथ की छटी ऊँगली को सभी महिलाएँ देखकर मजाक

उड़ाने लगी। शीलों को क्रोध आया। इस प्रसंग का वर्णन लेखिका ने चित्रात्मक भाषा में किया है।

''यकायक घूँघट उलट दिया बहू ने। मुँख तमतमाया हुआ था। साँवले गोल चहरे पर जुड़ी हुई पसीने की बूँद। पतले होठ कठोर से और मोटी नाक फूली हुई।''[4]

इस संवाद को पढ़ने के बाद प्रत्यक्ष रूप में शब्दों के माध्मय से चित्र उपरिथत होता है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में उवर्शी के विवाह का प्रसंग, 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में राणा को चोरी करने के लिए भेजते समय का प्रसंग, 'विजन' उपन्यास में डॉ. नेहा ने आँख की सर्जरी करते समय का प्रसंग, 'अगनपाखी' उपन्यास में भुवनमाहिनी के सती भेजने के लिए की जाने वाली आदि प्रसंग लेखिका ने चित्रात्मक रूप में वर्णन किया है। लेखिका की भाषा दुरूह होने पर भी अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हैं। अत्यंत सहज, संप्रेषणीय, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग उन्होंने किया है। कथा वस्तु की माँग के अनुसार भाषा का प्रयोग रचना। में सजीवनता प्रदान करने का कार्य करता है। नागरी जीवन पर आधारित उपन्यास है तो उसकी भाषा अंग्रेजी शब्द तथा वाक्य आते हैं। ग्रामीण जीवन से संबंधित कथा–वस्तु में आंचलिक भाषा के शब्द होते हें। मैत्रेयी पुष्पा ने चिकित्सा जगत से संबंधित उपन्यास 'विजन' की रचना की है। उन्हें ग्रामीण कथाकार के रूप में ख्याति मिली थी इस उपन्यास ने उनके महानगरीय जीवन की सूक्ष्म पहचान का परिचय दिया है। महानगरीय परिवेश के उपन्यास में अंग्रेजी शब्द तथा वाक्यों का भी उपयोग किया जाता है।

'विजन' उपन्यास चिकित्सा जगत से संबंधित होने के कारण ऐसी भाषा ने कथानक में वातावरण निर्मिती की है। सरल तथा प्रवाह मयी भाषा पठन में रस निर्मिती करती है। पढ़ने के आनन्द को बढ़ाती है। सामान्य पाठक को दुरूह नहीं लगती है। 'झूला नट' उपन्यास में सरल रोचक तथा प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है।

''कान्ता बाल किशन की पसंद–नापसंद का ध्यान करके दाल–साग बनती है। बाल किशन को इस छोटी–सी लड़की के बनाए खाने में ही नहीं, हर बात में रस आने लगा है।''[5]

इस संवाद में सरलता तथा रोचकता है। अभिदार्थ रूप में अर्थ बोध होने के कारण कोई कठिनाई महसूस नहीं होती है। कथारस में बाधा उत्पन्न न होने के कारण पाठक पर प्रवाहमयी भाषा का प्रभाव पड़ता है। साहित्य में भाषा के प्रयोग का अध्ययन शैली के अन्तर्गत किया जाता है। यह एक प्रकार की साहित्य समीक्षा है। डॉ. बालक राम शर्मा के अनुसार ''शैली–विज्ञान, भाषा–विज्ञान और आलोचना–शास्त्र की पृथक–पृथक उपलब्धियों का समावय विज्ञान है। वैसे इसे भाषा विज्ञान के अन्तर्गत परिगणत किया गया है। इसका कारण हयह है कि भाषा–विज्ञान की भाँति शैली–विज्ञान में भी एक विशेष दृष्टि से किया गया भाषा का अध्ययन ही होता है।''[6]

शैली–विज्ञान के अन्तर्गत भाषा के सौन्दर्य पक्ष का अध्ययन किया जाता है। कथा साहित्य में प्रमुख्यतः वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, फ्लैश बैक शैली, पत्र शैली, क्रमोच्छेदक शैली, मिश्रित अथवा समिश्र शैली, संवाद शैली का प्रयोग किया जाता है। मैत्रेयी का कथा–साहित्य भाषा शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्ध एवं उल्लेखनीय है। उनकी प्रत्येक कृति अनन्त उपेक्षाओं एवं सम्भावनाओं के साथ समाज का एक–एक अमूल्य रत्न हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। उनके उपन्यासों ने भाषा के सौन्दर्य एवं निखार की दृष्टि से साहित्य में अभूतपूर्व उपलब्धि के साथ प्रस्तुत हुआ है। समग्रतः उनके शिल्पपक्ष को भाषा तथा शैली शीर्षक दो संदर्भों में देखा जा सकता है। भाषा के संदर्भ में उनके उपन्यास साहित्य में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती है। प्रस्तुत है। उनके उपन्यासों में लक्षित भाषा के विविध रूप रंग। मैत्रेयी की सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण आयाम उनकी भाषा है। यही कारण रहा है कि उनकी भाषा को लेकर प्रारंभ से ही गुण दोषात्मक समीक्षाएँ होती रही हैं। भाषा साहित्य की सौन्दर्य वृद्धि में सहायक होती है। कहानी तथा उपन्यासों में भावागत सौन्दर्य निबंध अथवा वैचारिक साहित्य की उपेक्षा अधिक होता है। वैचारिक साहित्य में विचार को और कथा साहित्य में भाव तथा कल्पना जगत को महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य जगत में मैत्रेयी पुष्पा ने कथा साहित्य के माध्यम से अपना स्थान निर्माण किया है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी हुआ है। 'त्रिया–हठ' उपन्यास में काव्यात्मक भाषा पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर हुई है।

**lelkekf;d lnHkk dh 0;tuk&**

वर्तमान समय में समसामयिक संदर्भों की पड़ताल से सर्वप्रथम स्वत्व की अवधारणा आत्मनिर्भरता की भावना, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा नारी चेतना विषयक दृष्टिकोण आदि संदर्भों की व्यंजना करके समसायिक विविधताओं का विवेचन वर्तमान साहित्य के लेखक एवं विवेचन वर्तमान साहित्य के लेखक एवं लेखिकाओं के माध्यम से सामाजिक धरातल पर उल्लेखित किया गया है। मौजूदा समय में पुरूष के साथ–साथ महिला भी आत्मनिर्भर बनने हेतु सम्पूर्ण रूप से प्रयत्नशील है। समसामयिक लेखन चेतना के स्वर मुखरता से प्रस्तुत हुए हैं। सशक्तीकरण ने आधुनिक समाज में प्रत्येक वर्ग को आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से ओत–प्रोत किया है किन्तु

मुख्य रूप से दामित, शोषित, पीड़ित वर्गों के लिए वर्तमान समय के अस्तित्व को उद्घटित करने का सशक्त मार्ग है। समासामयिक संदर्भों की मुख्य व्यंजना स्त्री आजादी को लेकर तमाम बहसों का प्रमुख मद्दा है। सभी बहसों के मूल में पाश्चात्य नारी मुक्ति आन्दोलन की भूमिका अनन्य साधारण रही है। नारी चाहे गरीब हो या अमीर, उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की, पाश्चात्य हो या भारतीय, शिक्षित हो या अज्ञानी वह हर स्थिति में हर हाल में पुरूष वर्ग द्वारा प्रताड़ित, लांछित होती रही है। स्त्री को केवल भोग की वस्तु के रूप में स्वीकार कर उनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक जैसे आदि क्षेत्रों में अधिकार, स्वतंत्रता बिल्कुल स्वीकार नहीं की जाती थी। वह ऐसी स्थिति को व्यवस्था को बदलना चाहती थी, पुरूष सत्तावादी सोच को नकार कर अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहती थी। अपने ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचार को नकार कर अपने अधिकार को जानना चाहती थी। इन सभी कारणों की वजह से ही नारी मुक्ति आंदोलन ने नारी को पारम्परिक रूढ़ियों, मान्यताओं, अंधविश्वासों के शोषण से मुक्त कर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाज में प्रतिष्ठापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समसामायिक संदर्भों को लेकर मैत्रेयी की कलम नारी विषयक दृष्टिकोण के अनुसार–

''भाषण था–प्रेम बड़ी चीज है। भगवान क्या है, प्रेम का स्वरूपा यदि पुरूष की आँखे स्त्री की आँखों में प्रेम देख सकती हैं तो बलात्कार जैसी कभी न हों। अगर नारी की आँखे पुरूष की आँखों में प्यार खोज लेती हैं तो घृणा कहाँ रह जाती है? आप जानते हैं मैं यहाँ क्यों रूकी हुई हूँ? आप समझते हैं कि मैं जिन्दा भी क्यों हूँ? बड़ी सीधी बात है आप लोगों ने हमारी दुनिया उजाड़ी है मैं आपको उजाड़े बिना नहीं मरूँगी। मैं सबको बता दूँगी कि पाप कहाँ पलता है? अपराध कौन लोग करते हैं? सताने और मारने वाले ठेकेदार कौन हैं? मेरे पिता ने इन्हीं बातों से समझौता नहीं करना चाहा था, यही उनका गुनाह रहा। मैं बहुत समझदार नहीं, पर इतना तो समझती हूँ कि हमारे लिए क्या गलत है, क्या सही?''[7]

विषयवस्तु समसामयिक और विचार योग्य हैं। महिला चिन्तन से हमारा तात्पर्य है कि यह कोई संघर्ष का, लड़ाई का मुद्दा नहीं है। अपने लिए हम स्पेस बनाये। स्पेस तभी बनेगा, जब हममें आत्मविश्वास होगा। जब अपने बड़े होने तक हम यह अहसास करना शुरू करेगें कि हम हीन नहीं है, हम कमजोर नहीं हैं। हम फेयर सेक्स नहीं है, फेयर का मुखौटा देकर हमें फुसला कर सुन्दरता के फ्रेम में बाँध दिया गया कि तुम सजो, संवरो, सुन्दर दिखों। हम तुम्हें सहारते है। सुन्दर तो हम हैं सुन्दर दिखना हमारा अधिकार है। वह एक गुझा है, जो हमें प्रकृति प्रकृति से मिला है। नैसर्गिक है, स्वाभाविक है। हम उसे संजोना, संवारना चाहेगें। न तो उसको आगे बढ़ाने का मुद्दा बनाएगे और न तो उसे अपनी कमजोरी बनाएगें। मैत्रेयी की रचनाओं में वर्तमान समय की खुली तस्वीर विशेष संदर्भों को लेकर प्रस्तुत हुई है।

### efgyk l'kDrhdj.k d: Hkkf"kd mikknku&

महिला कथाकारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि उनके लेखन का कथानक सामाजिक एवं भाषायि दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा समाजोपयोगी होना आवश्यक है। जहाँ तक महिला सशक्तीकरण के भाषिक उपादान का प्रश्न है तो जब नारी अपने हक के लिए समाज की खोखली रीतियों से टकरायेंगी तक उसकी अभिव्यक्ति भाषिक रूप से ही पितृसत्ता को चुनौती देने में सक्षम हो सकेगी। किसी समाज में नारी का क्या स्थान है, इससे उसे समाज की स्थिति पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ता है। जिस समाज में नारी जाति का शोषण होता है। उसका अर्थ है कि उस समाज का आधा अंग शोषित और पीड़ित है। यदि नारी के अधिकारों का हनन हो, उसे आगे बढ़ने से रोका जाए तो ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण समाज की उन्नति संभव नहीं है। प्राचीन काल से नारी की स्थिति समाज का विकास मापने का मानदण्ड रही है। मैत्रेयी की रचनाओं में स्त्री शक्ति का भाषिक चित्रण भी कुशलता से हुआ है।

''अल्मा की आँखों में न लज्जा थी न भय, न घृणा थी न आग। आगे क्या करेगी कोई नहीं जान सकता। पैंतालीस की अवस्था तक खुले में सम्भोग–सुख लूटने वाले श्रीराम ने मन ही मन पक्का निश्चय कर लिया कि संतोले मेहतर के दु:शासन की तरह नंगी कर देने के बाद वे अल्मा को बेपर्द करने की हिम्मत नहीं जुटा पाएँगे। क्या सारे पर्दे मान में ही टँके होते हैं? उनमें डर ने सिर उठाया है या फिर अपना ही अपराध बोध, हर बेजा हरकत वर्जित लग रही है। औरत के साथ उनका ऐसा साबका पड़ेगा, सोचा न था।''[8]

नारी को उत्पीड़न करने का एक संकेत समाज की भाषा में मैत्रेयी के इस उपन्यास में दर्शाया गया है, क्योंकि समाज की भाषा भी पितृक सत्ता को प्रतिबिम्बित करती है। डैल स्पैडर की पुस्तक 'Man made Language' इसी तथ्य की पुष्टि करता है। अंग्रेजी भाषा शाब्दिक अर्थों मे पुरूष रचित है हिन्दी भाषा में भी यही स्थिति हैं। हिन्दी भाषा भी पितृक भाषा है जो पितृक सत्ता व अधिकार को दर्शाती है जो स्त्री को वस्तु की तरह पेश करती है। स्त्री–विमर्श की एक चुनौती यह भी है कि किस प्रकार नारी के अस्तित्व को अस्वीकार करने वाली इस भाषा को परिवर्तित किया जाए। महिला सशक्तीकरण के भाषिक उपादान को प्रकट करने की भाषा के मुद्दे पर

स्त्री लेखिकाओं को पितृक भाषा को चुनौती देनी चाहिए। गालियाँ शिक्षण केन्द्रित अर्थों से उपतजी है, अब प्रश्न उठता है कि गालियाँ, शिशन केन्द्रित क्यों है जबकि सारी गालियाँ पुरूषों द्वारा दी जाती हैं, मैनेजर पाण्डेय इस सन्दर्भ में लिखते हैं।

''अगर इन गालियों का समाज शास्त्रीय विश्लेषण करें तो यह साफ जाहिर होगा कि दुनिया में जितनी गालियाँ हैं वे स्त्रियों के लिए होती है। गालियाँ दी तो पुरूषों को जाती है पर वे मूलतः स्त्रियों को अपमानित करने के लिए दी जाती है। लोक जीवन में गालियों के माध्यम से स्त्री विरोधी चेतना की मुखर अभिव्यक्ति भी होती है।''[9]

इस प्रकार सारी गालियाँ नारी विरोधी दृष्टिकोण को व्यक्त करती है। सारी गालियों में पुरूष की माँ, बहन, बेटी के यौनागों की चर्चा होती है, क्योंकि नारी को केवल देह तक सीमित कर दिया है। जब–जब पुरूष के सामने उसकी स्त्रियों की देह की चर्चा होती हैं तो वह भयभीत अवश्य होता है। यही कारण है कि इन गालियों का प्रयोग अधिकतर लड़ाई में भावनाओं को चोट पहुँचाने के लिए किया जाता है। वर्तमान में महिला सुरक्षा अधिनियम के तहत जिन सशक्त आयोजनों को स्त्री रक्षा हेतु चलाया गया है उनके माध्यम से नारी अपने पर हो रहे अन्याय के प्रति विद्रोह करने का भाषिक साहस जुटा पायी है। सशक्तीकरण ने आज की नारी को एक विशेष आन्तरिक बल प्रदान किया है। स्त्री विरोधी भाषा स्त्री को कमजोर हीन दिखाने अपमानित करने का जो प्रयास पितृक भाषा में पुरूष समाज के द्वारा अब तक किया जा रहा था। उसके प्रति अब नारियाँ आवाज उठाने में प्रबल दिखा रहीं हैं क्योंकि मुख्य रूप से नारी–विमर्श को प्रारम्भ में उजागर करने का प्रयास अवश्यक ही पुरूषों ने किया था, पर पूर्ण रूप से नारी की स्थिति को उसकी दुर्दशा को व्यक्त करने में, उसके मानवीय अधिकारों की माँगों को उठाने में असमर्थ रहे हैं। सही अर्थों में स्त्रियों की समस्याओं को उठाने में महिला सशक्तीकरण ने नारी संबंधित सभी समस्याओं एवं उनको अपने अधिकारों के लिए बोलने का साहस प्रदान किया है। जिसका आभास स्त्री–विमर्श ने करवाया है। वह है पुरूष के विचार में स्त्री की सम्मान जनक छवि को स्थापित करना है। भाषा में सुधार करके ही भाषायी त्रुटि को सुधारा जा सकता है। मेहरून्निसा परवेज भी लिखती है–

''महिला लेखन से महिलाओं को पूर्ण रूप से 'फीडबैक' मिलता है। नारी लेखन नारी मन की ही अभिव्यक्ति है। नारी ने नारी की गूँगी पीड़ा को लिखा, उजागर किया उकसे मौन को शब्द दिए हैं। पुरूष लेखक के लिए नारी रूमानी–ख्याल यादों की मूरत थी, बेशक नारी लेखन ने पुरूष लेखकों के हाथ से उसकी सुन्दर बेजुबान गुड़िया छीन ली है और रोती, चीखती, बिलखती, कलपटी नारी को सामने ला खड़ा किया है।''[10]

महिला सशक्तीकरण के भाषिक उपादान के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि आज की नारी केवल आर्थिक कारणों के वशीभूत होकर कार्यजगत में अपना भाग्य नहीं आजबा रही है। समाज में अपनी अस्मिता बनाये, रखना तथा निरन्तर प्रयासों के साथ नित नई सफलता प्राप्त करना अपनी कार्य कुशलता से समाज में भी अपना आर्थिक सहयोग देना स्त्री की प्राथमिकता बनता जा रहा है। सदैव पुरूषों के दिखाये–सिखाये रास्तों पर चलने वाली नारी, आज स्वयं नये रास्तों और मंजिलों का निर्माण कर रही हैं।

fu"d"k&

कथा साहित्य की आत्मा कथानक होता है, तो उसका शरीर भाषा शैली और शिल्प होता है। मुहावरे और लोकाक्तियाँ सौन्दर्य वृद्धि करते हैं। लोक कथाएँ और लोकगीत संस्कृति की पहचान दिलाते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने कथा–साहित्य के पढ़ने के पश्चात् यह बात स्पष्ट हुई है। कथानक की माँग के अनुसार भाषा का प्रयोग हुआ है। कहीं–कहीं आवश्यकतानुसार इनके कथा साहित्य पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु ग्रामीण परिवेश की कथा वस्तु में अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग अत्यल्प किया है। 'विजन' उपन्यास चिकित्सा जगत से संबंधित होने के कारण अंग्रेजी भाषा का प्रभाव उचित है। सरल तथा प्रवाहमयी भाषा ने रोचकता निर्माण की है। मैत्रेयी पुष्पा के सम्पूर्ण कथा साहित्य में आंचलिक भाषा का प्रभाव पड़ा है। बुन्देल खण्ड तथा ब्रज प्रदेश की स्थानीय बोलियों का प्रभाव दिखाई देता है। अश्लीलता वर्तन में भी होती है और भाषा में भी इनके कथा साहित्य में कई जगह पर अश्लील भाषा का प्रयोग हुआ है। समसामायिक संदर्भों से संबंधित रचना करने वाले रचनाकारों में मैत्रेयी ऐसी रचनाकर हैं। जिन्होंने साहित्य में व्यक्ति के स्तर पर नारी की प्रतिष्ठा और उसकी अस्मिता संबयिों प्रश्नों को मुखरता से उठाया है। मैत्रेयी की नारी उस पारम्परिक स्त्री से बिल्कुल भिन्न है, जो आँसू पीकर व भार सहकर भी अन्दर ही अन्दर घुटने वाली होती है, ये स्त्रियाँ उन्मुक्त विचारों वाली तो है ही अपने जीवन की प्रतिनिधितव करने का साहस भी पूरी जागरूकता उठाने के साथ इनमें है। इनके सम्पूर्ण कथा–साहित्य में नारी की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, सांस्कृतिक, समसामायिक और विभिन्न समस्याएँ सामने उजागर हुई हैं। इनकी रचनाओं में नारी की स्थिति पर तर्क संगत एवं गंभीर चिंतन किया है। साथ ही पुरूष लेखकों से कुद अपेक्षा भी रखी है। वह साहित्याकारों से अपेक्षा करती है कि वे ऐसे परिस्थिति में परिवर्तन आए।

शोषण कम होने में सहायता हो। मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार अनपढ़ आदमी मात्र अपनी पत्नी का शोषण कर सकता है। आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक कारणों से नारी का शोषण होता है। वैचारिक साहित्य के अध्ययन के पश्चात् स्पष्ट होता है कि, नारी शोषण में एक कारण धार्मिक रीति–रिवाज है। मैत्रेयी के अनुसार नारी के शोषण का आरम्भ परिवार से होता है और सामाजिक स्तर तक पहुँचता है।

InHk&

1 अक्षरपर्व पत्रिका, पृ. 54, जुलाई 2012
2 बेतबा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 70
3 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 57
4 झूलानट, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 23
5 झूलानट, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 122
6 डॉ. बालक राम शर्मा, अज्ञेय के गद्य–साहित्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 25
7 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 370
8 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 367
9 मैनेजर पाण्डेय, हंस 1994, पृ. 29
10 मेहरून्निसा परवेज, साहित्य वार्षिकी, भूमिका से